Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

वैश्विक परिदृश्य में गीता का मूल्य

Dr. Manjusha*

Assistant Lecturer in Hindi, Shri Durga Mahila College, Tohana

सार – ***'श्रीमद्भगवद् गीता' शाश्वत मूल्यों का भण्डार है। 'मूल्य' शब्द संस्कृत की 'मूल' धातु में 'यत्' प्रत्यय लगाने से बना है, जिसका मूल अर्थ 'कीमत' है। 'मूल्य' शब्द को अंग्रेजी में वैल्यू का पर्याय माना जाता है। 'वैल्यू' शब्द लेटिन भाषा के वैलीरी शब्द से बना है जिसका अर्थ 'अच्छा' 'सुन्दर' होता है।***

----------X----------

आर. के. मुकर्जी ने 'मूल्य' के पर्यायों की ओर संकेत किया है- लक्ष्य, आदर्श, प्रतिमान आदि। डॉ. कुमार विमल ने 'मूल्य' को जीवन-दृष्टि माना है। प्रबुद्ध चिंतक 'अर्बन' ने मूल्य की तीन परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं- प्रथम परिभाषा के अनुसार जो "जो मानवीय इच्छा की तुष्टि करे वही मूल्य है।"1 "मूल्य- वह वस्तु है जो जीवन को सदैव विकास की ओर ले जाती है।"2 "मूल्य वह है जो व्यक्तियों को विकास अथवा आत्म-विकास या आत्मानुभूति की ओर ले जाती है।"3 पेरी नामक पाश्चात्य विद्वान् ने मूल्य के अनेक पर्यायों की ओर संकेत किया है- कत्र्तव्य, दया, मूल्य, उपयोगिता, आदर्श, नियामक, सुंदर, पवित्र, न्याय, प्रसन्नता।4 डॉ. हुकमचंद राजपाल 'मूल्य' को लोकमंगल की श्रेष्ठ अवस्था मानने के पक्षधर हैं। .... मूल्य समष्टिगत उद्देश्य को आत्मसात् किये रहते हैं। उन्होंने मूल्य को निजी स्वार्थों से ऊपर लोकहित के अर्थ में स्वीकार किया है।5 मानव जीवन को सुंदरतम बनाने की पे्ररणा इन मूल्यों में ही सन्निहित होती है। वास्तव में श्रेष्ठ मूल्य वही हैं जो समूची मानव जाति के उत्थान का मार्ग प्रदर्शित करते हैं।6 मूल्यों का मानव के साथ चिरंतन सम्बन्ध रहा है। मानव की उन्नति और विकास मूल्यों पर ही आधारित रहते हैं। मानव-मूल्य ही मानव को अनेक जीवधारियों पृथक् करता है। मनव की क्रिया, संगठन, व्यक्तित्व, समाज और सभ्यता जैसी महान् व्यवस्थाओं के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्य महत्त्व रखता है। 'मूल्य' सम्बन्धी सभी सिद्धान्त प्रगति और समृद्धि के हेतु होते हैं। भारत में जीवन को व्यवस्थित चलाने के लिए पुरुषार्थ की कल्पना की गई है। ये चारों पुरुषार्थ जीवन को सम्यक् एवं संयमति ढंग से चलाने के लिए बनाये गये हैं। मूल्य से समाज का गहरा सम्बन्ध है। वस्तुतः मूल्य मानव-समाज की आधार भूमि है। मानव-मूल्य मानव मात्र के शाश्वत और चिरंतन के मूल तत्त्व हैं।

श्रीकृष्ण द्वैपायन वेदव्यास द्वारा विरचति 'श्रीमद्भगवद्गीता' 'महाभारत' के भीष्म पर्व का एक अध्याय है। गीता को 'उपनिषद्', 'योग शास्त्र', 'ब्रह्म-विद्या', 'श्रीकृष्ण-अर्जुन-संवाद' भी कहा जाता है। वस्तुतः यह महाग्रन्थ वेदों का सार है। गीता के माहात्म्य के संबंध में एक श्लोक आता है -

सर्वोपनिषदों गावो दोग्धा गोपालनदंनः।

पार्थो वत्सरू सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत।।

अर्थात् समस्त उपनिषद् गाय हैं, उन गायों को दुहने वाले श्रीकृष्ण भगवान् हैं। अर्जुन बछड़ा है और इस गीता के दूध रूपी अमृत का पान ज्ञानीजन करते हैं।

श्रीमद्भगवद् गीता धार्मिक ग्रन्थ होने के साथ-साथ, समस्त मानव जाति के लिए ज्ञान का स्त्रोत भी है। इसीलिए विश्व की लगभग सभी भाषाओं में इसके अनुवाद उपलब्ध हैं। मनुष्य जीवन का मार्गदर्शन भगवद् गीता का मूल विषय एवं अभिप्राय है। यह ज्ञान भगवान् श्रीकृष्ण जी के मुखारविंद से एवं महर्षि वेदव्यास जी के माध्यम से महाभारत के युद्ध से कुछ पूर्व अर्जुन तक पहुँचा और तत्पश्चात् मानव जाति के कल्याण के लिए सुरक्षित रहा। भगवद् गीता 700 श्लोकों पर आधारित है। ये सभी श्लोक, महाभारत के युद्ध के कुछ समय पूर्व श्रीकृष्ण-अर्जुन के संवाद के रूप में वर्णित किए गए हैं।7

भगवद् गीता के अठारह अध्यायों को तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। पहले छः अध्याय योग विषय से संबंधित हैं। अगले छः अध्याय ज्ञान योग को वर्णित करते हैं तथा अंतिम 6 में भक्तियोग का उल्लेख है। ज्ञान, कर्म व व्यक्ति- ये तीनों

www.ignited.in

मानव मात्र मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं, ऐसा गीता में कहा गया है।

भगवद् गीता संसार की लोकप्रिय रचना है। विदेशी विद्वानों को भी भगवद्गीता ने बहुत प्रभावित किया है। सुप्रसिद्ध अमरीकी दार्शनिक हैनरी थ्युरो ने कहा है कि, "हर रोज मैं अपने मस्तिष्क को गीता के महान् एवं विश्वव्यापी फलसफे से स्नान करवाता हूँ। गीता ज्ञान के सामने विश्व के दूसरे सब ज्ञान तुच्छ लगते हैं।"9 पाश्चात्य विद्वान् ऐमरसन ने गीता के मूल्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। रूस के प्रसिद्ध लेखक ताल्सताय ने भी भगवद् गीता को संसार का बेजोड़ ग्रन्थ कहा है।

भगवद्गीता के सम्बन्ध में श्रीकृष्ण ने कहा है- जो व्यक्ति इस गीता शास्त्र को मेरे भक्तों में कहेगा वह निस्संदेह मुझी को प्राप्त होगा- य इमं परमं गुहयं मद्भक्तेस्वभिधास्यति। भक्ति मपि परां कृत्वा मामैवैष्यत्य संशयः।।

भागवत् गीता संसार का लोकप्रिय ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ के सैंकड़ों अनुवाद हुए हैं। गीता भारतीय मनीषा की मानव जाति को अनुपम देन है। गीता कालजयी रचना है। गीता के ज्ञान की सार्वभौमिकता एवं सार्वकालिकता को सभी विद्वानों ने स्वीकारा है। गीता वस्तुतः अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व का ग्रन्थ है। इसका लक्ष्य सम्पूर्ण मानवता का कल्याण है। यह ग्रन्थ शाश्वत सुख व शांति का मार्ग सुझाता है। आज जो समाज व राष्ट्र की दुर्दशा है, चरित्रहीनता, भटकन व किंकर्तव्यविमूढ़ता है, वह केवल गीता के अनुसार आचरण से विमुख होने के कारण हैं। अनिश्चिता, अनिर्णय, दुविधा या असमंजस की स्थिति में गीता का उपदेश ही मार्गदर्शक हो सकता है।

गीता एक बहुमूल्य ग्रन्थ है। यह संसार को जीवन जीने की शिक्षा देता है। गीता जीवन संग्राम में विजय प्राप्ति के लिए कर्मयोग की शिक्षा देता है। गीता का ज्ञान सचोट व असरकारक है। गीता का कर्मयोग मानव-मात्र प्रेरित करता है। गीता में योगीराज श्रीकृष्ण कहते हैं-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफल हेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्व कर्मणि।।11

अर्थात् हे मानव! तेरा कर्म करने का अधिकार है, उसके फल की तनिक भी चिंता मत करो। वस्तुतरू इस सिद्धान्त को सभी देशों ने स्वीकारा है। यह वैश्विक परिदृश्य में गीता के मूल्य-बोध की महत्ता सर्वमान्य है। अनेक देशों ने कर्म-साधना को कर्म संस्कृति माना है जबकि हमारा देश उत्सवोन्मुखी संस्कृति है। वस्तुतः हमारा देश पाखंडवाद से घिरा हुआ देश है। किसी विद्वान् ने कहा है- 'उठो जागो और अपने देश को देखो' गीता के अनुसार कर्मयोगी कर्मों के फल का त्याग करके भगवत् प्राप्ति रूप शांति को प्राप्त होता है।

गीता में 'संयम बोध' का विस्तार से वर्णन किया गया है। संयम बोध को समस्त देशों ने माना है। गीता में स्पष्ट कहा है कि विषयों का चिंतन करने वाले पुरुष की उन विषयों में आसक्ति हो जाती है, आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है और कामना में विघ्न पडने से क्रोध उत्पन्न होता है। इसी भाव को निम्न श्लोक में व्यक्त किया गया है, यथा-

क्रोधात् भवती सम्मोह, सम्मोहात्स्मृति विभ्रमः।

स्मृति, भ्रंशाद बुद्धि नाशो, बुद्धि नाशात्प्रणश्यति।।12

आज के इस आपा-धापी और अफरा-तफरी के इस युग में मानव विचलित और बेचैन है। ऐसे में गीता मानव को शांति का उपदेश देती हुई कहती है-

विहाय कामान्य सर्वान्पुमांश्चरति निरूस्पृह।

निर्ममों निरंहकारः स शांतिमधि गच्छति।।13

अर्थात् जो पुरुष सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग कर ममता रहित, अहंकार रहित और स्पृहारहित हुआ विचरता है वही शांति को प्राप्त होता है।

आज यह संसार राग-द्वेष से आक्रांत है। गीता का मत है-

ज्ञेयः स नित्य संन्यासी यो न द्वेष्टि न कांगति।

निद्वन्द्वो हि महावाहो सुखं बान्धात्प्रमुच्यते।।14

जो पुरुष न किसी से द्वेष करता है और न किसी की आकांक्षा करता है, वह कर्मयोगी सदा संन्यासी ही समझने योग्य है, क्योंकि राग-द्वेषादि द्वन्द्वों से रहित पुरुष संसार बंधन से मुक्त हो जाता है। वैश्विक परिदृश्य में श्रेष्ठ पुरुष बनने की शिक्षा देते हुए गीता में कहा गया है-

शक्रोती-हैव यरू सोदुप प्राक्शरीरविमोक्षणात।

कामक्रोधोद्भवं वेगं सं युक्त स सुखी नरः।।

अर्थात् जो साधक इस मनुष्य शरीर में, शरीर का नाश होने से पहले-पहले ही काम-क्रोध से उत्पन्न होने वाले वेग को सहन

www.ignited.in

करने में समर्थ हो जाता है, वही पुरुष योगी है और वही सुखी भी है।

संसार के मानवों को शिक्षा देती हुई गीता कहती है-

सुहन्मित्रार्युदासीन मध्यस्थ द्वेष्य बंधुषु।

साधुष्वपि च पापेसु समबुद्धिर्विशिष्यते।।15

अर्थात् स्वार्थरहित सबका हित करने वाला सुहृद, मित्र, बैरी, उदासीन, मध्यस्थ द्वेष्य और बंधुगणों में और पापियों में भी समान भाव रखने वाला व्यक्ति अत्यंत श्रेष्ठ है।

गीता के अठारवें अध्याय के सोलहवें श्लोक में कहा गया है कि सत्संग और शास्त्र के अभ्यास से तथा भगवर्थ कर्म और उपासना करने से मनुष्य की बुद्धि शुद्ध होती है, जो व्यक्ति उपर्युक्त साधनों से रहित है, उसकी बुद्धि अशुद्ध है।

वैश्विक परिदृश्य में 'योग' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। गीता में कहा गया है कि जो दुरूख रूप संसार से संयोग से रहित है तथा जिसका नाम योग है, जानना चाहिए। धैर्य और उत्साहयुक्त चित्त से निश्चयपूर्वक करना कत्र्तव्य है-

सविद्यात दुरूख संयोग वियोगं योग संगितम।

अनिश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्ण चेतसा।।16

गीता में शुद्ध आहार पर प्रकाश डाला गया है जो सम्पूर्ण विश्व के लिए मान्य है क्योंकि स्वास्थ्य ही धन है-

आयुः सत्व बलारोग्य सुखप्रीति विवर्धनाः।

रस्या स्निग्धाः स्थिरा हृधा आहारारू सात्त्विकप्रियाः।।17

अर्थात् आयु, बुद्धि-बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाले, रसयुक्त, चिकने और स्थिर रहने वाले तथा स्वभाव से ही मन को प्रिय-ऐसे आहार अर्थात् भोजन करने के पदार्थ सात्विक पुरुष को प्रिय होते हैं।

संसार में श्रेष्ठ पुरुष कौन है? इसका उत्तर गीता में दिया गया है। सुख-दुःख को समान समझने वाले जिस धीर पुरुष को ये इन्द्रियों और विषयों के संयोग व्याकुल नहीं करते, वह मोक्ष के योग्य होता है। गीता में कहा गया है-

यं हि न व्यथयन्न्येते पुरुषं पुरुषर्षभ।

समदुःखसुखंधीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते।।18

सम्पूर्ण विश्व का यह सार्वभौमिक नियम है कि जन्मे हुए की मृत्यु निश्चित है। यथा-

जातस्य हि धुरवों मृत्यु धुरवं जन्म मृतस्यच।19

संसार के सभी देशों के लोगों ने यह स्वीकार किया है कि ज्ञान पवित्र वस्तु है। गीता में कहा गया है-

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।।20

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निरूसंदेह कुछ भी नहीं है। उस ज्ञान को कितने ही काल से कर्मयोग के द्वारा शुद्ध अन्तःकरण हुआ मनुष्य अपने आप ही आत्मा में पा लेता है।

गीता में कहा गया है कि जगत् के जीवन-संग्राम में विजय की प्राप्ति के लिए कर्मयोग सिद्धान्त का ज्ञान जितना उपयोगी है, जितना सचोट और असरदायक है उतना दूसरा और कोई ज्ञान नहीं है। इस कारण कर्मयोग का अभ्यास प्रत्येक व्यक्ति के लिए बहुत उपयोगी है। वस्तुतः योग का संसार में विशेष महत्त्व है। योगीराज बाबा रामदेव के आशीर्वाद से, वैश्विक परिपे्रक्ष्य में योग का महत्त्व उल्लेखनीय है। वस्तुतः गीता का योग सिद्धान्त पूर्ण रूपेण व्यावहारिक तथा सर्वग्राही सिद्धांत है।

गीता के बारहवें अध्याय के बीसवें श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है कि धर्ममय अमृत को निष्काम भाव से सेवन करने वाला व्यक्ति सदैव सुखी रहता है। गीता के अनुसार अहिंसा, सत्य, दया, शांति, ब्रह्मचर्य, शम, दम, तितिक्षा, यश, दान, तप, अध्ययन, अध्यापन को धर्म का क्षेत्र माना जा सकता है। वस्तुतः गीता वैश्विक परिपे्रक्ष्य में शाश्वत सुख व शांति का रास्ता है। "आज जो समाज व राष्ट्र की दुर्दशा है, चरित्रहीनता, भटकाव, किंकत्र्तव्यविमूढ़ता है, वह केवल गीता के अनुसार आचरण से विमुख होने के कारण है। आज के इस युग में अनिश्चितता, अनिर्णय, दुविधा या असमंजस की स्थिति में गीता का उपदेश ही मार्गदर्शक हो सकता है।"21

वस्तुतः गीता मानव-मूल्यों का भंडार है। गीता भवसागर पार करने का मूल मंत्र है। गीता हृदय में धारण करने योग्य है। ईश्वर तत्त्व को जानने के लिए इसके समान कोई ग्रन्थ नहीं है। गीता व्यक्ति को सम्पूर्ण होने का अहसास कराती है। गीता जीवन में आत्मानंद की अनुभूति कराने का माध्यम है। जीवन को पूर्णत्व की ओर ले जाने का नाम ही गीता है। गीता

के अनुसार, संसार में न कोई शत्रु है, न मित्र। एक आत्मा ही सत्य है। गीता के अनुसार आत्मा का उत्कर्ष ही अहिंसा है और आत्मा का हनन ही हिंसा है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि श्रीमद्भगवद्गीता मनुष्य मात्र में कोई भेद नहीं करती। उसकी सार्वभौमिक दृष्टि 'सर्वधर्मसमभाव' की अलख जगाती है। मनुष्य के आत्मोद्धार के लिए 'अभय' का होना बहुत आवश्यक है। गीता की जीवन-दृष्टि मनुष्य को निर्भयता का कवच प्रदान करती है। वस्तुतः आज का मनव विपर्यस्त स्थितियों में साँस ले रहा है। स्वार्थपरता, भौतिक संकुलता, पारस्परिक वैमनस्य, मानवीय मूल्यों का ह्रास, संताप एवं संत्रास प्रभृति आसुरी प्रवृत्तियों से सम्पूर्ण विश्व संतप्त है। ऐसे में भगवद्गीता ही संसार को नई गति व नई दिशा दे सकती है।

संदर्भ

1. W.M. Urban, Fundamentls of Ethics, P. 16
2. वही, पृ. 17
3. वही, पृ. 18
4. The American peoples Ency, Vol. 19
5. हुकमचंद राजपाल, आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य, पृ. 60
6. वही, पृ. 61
7. केवल कृष्ण ऋषि, शम्म-ए-ह$की$कत, प्रस्तावना
8. वही, पृ. 2
9. वही, पृ. 2
10. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय-18, श्लोक-68
11. वही, 2/47
12. वही, 2/63
13. वही, 3/71
14. वही, 5/3
15. वही, 6/9
16. वही, 6/23
17. वही, 17/8
18. वही, 2/16
19. वही, 2/27
20. वही, 4/38
21. दामोदर भगेरिया, श्रीमद्भगवद् गीता, पृ. 15

Corresponding Author

Dr. Manjusha*

Assistant Lecturer in Hindi, Shri Durga Mahila College, Tohana

www.ignited.in